'मजरूह सुल्तानपुरी' पर संगोष्ठी का आयोजन

नई दिल्ली, लोकसत्य

साहित्य अकेडमी की ओर से प्रख्यात उर्दू शायर और गीतकार 'मजरूह सुल्तानपुरी की जन्मशतवार्षिकी को मनाने के लिए दो दिवसीय संगोष्ठी का शुभारंभ किया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकेडमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने की। उद्घाटन वक्तव्य साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष एवं महत्तर सदस्य गोपीचंद नारंग ने तथा आरंभिक वक्तव्य उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक शीन काफ़ निज़ाम द्वारा दिया गया। बीज वक्तव्य प्रख्यात उर्दू समालोचक अर्जुमंद आरा ने प्रस्तुत किया।

● मजरूह तरक्की पसंद एवं इंकलाबी शायर थे : नारंग

अपने उद्घाटन वक्तव्य में प्रोफेसर गोपीचंद नारंग ने कहा कि मजरूह सुल्तानपुरी एक सच्चे, तरक्की पसंद और इंकलाबी शायर थे। उन्होंने अपने जीवन में अनेक उपेक्षाओं को सहा लेकिन अपनी बात कहने का फन नहीं बदला। प्रोफेसर गोपीचंद नारंग ने उनके जीवन से जुड़े बहुत से प्रसंगों को याद करते हुए बताया कि वे नज़्मों की उस प्राथमिकता के दौर में भी अपनी

गज़लों और फ़िल्मी गीतों से अपनी बात सारे समाज के सामने रखते रहे। गज़लों को कितना भी हुस्न और माशूक से जोड़ा जाता रहा फिर भी वे अपने इंकलाब और आज़ादी के स्वर को अपने कलाम में पेश करते रहे।